कुल पृष्ठ संख्या– 28 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

13927

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candi
(In
(In
THO
परीक्ष
शब्दों
सो

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय संस्कृत व्याकरण

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 22/04/2022

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	3
2	6	20	3
3	12	21	4
4	2	22	4
5	2	23	4
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	80
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	Eighty अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 4 0 1 0 0

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 167/2020

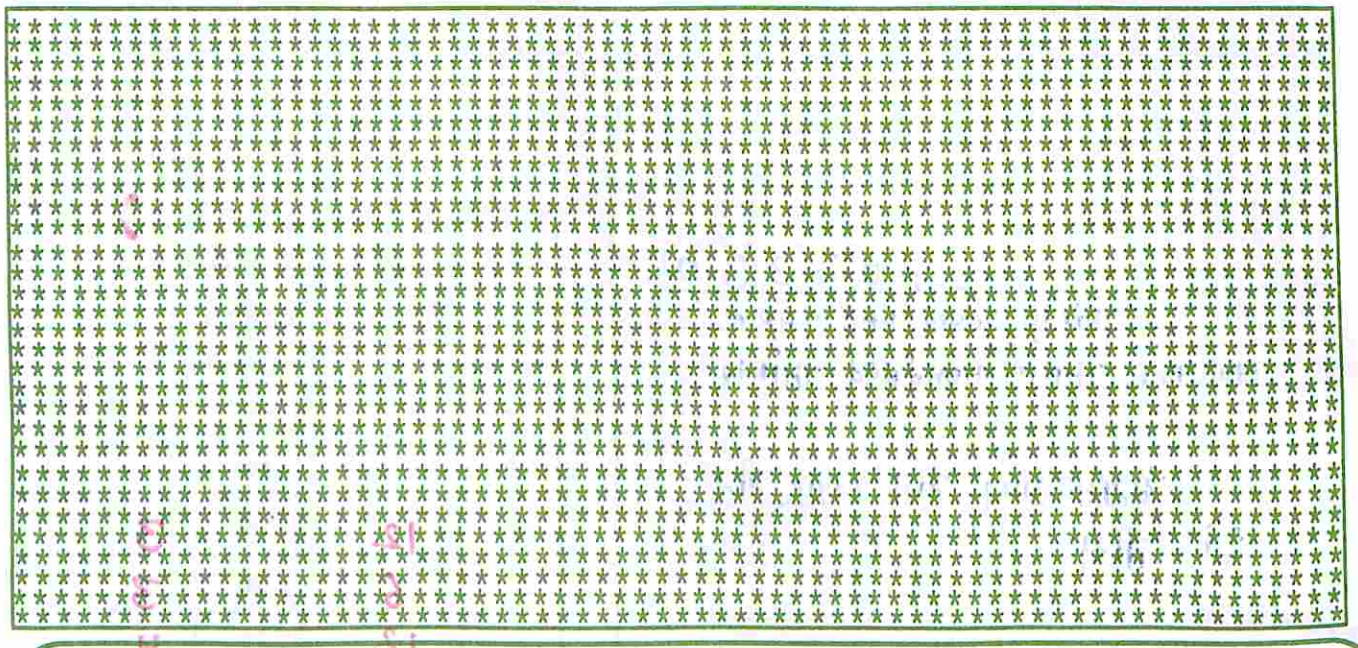

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	1	
उत्तरम् →		(i) दुहः (ब)
		(ii) विश्वौहः (स)
		(iii) "इग्यणः सम्प्रसारणम्" (द)
		(iv) गीः (अ)
		(v) कस्याम् (स)

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(vi)	ददाति (अ)
	(vii)	सर्वः (द)
	(viii)	स्वरादि निपातमव्ययम् (अ)
	(ix)	स्मारं - स्मारम् (द)
	(x)	"उद्गीतस्य" (ब)
	(xi)	स्त्रीलिङ्गम् (ब)
	(xii)	जयः (द)

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	२	
उत्तरम् →		२ (i) "एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः"
		(ii) "चतुरनडुहोराम् उदात्तः"
		(iii) "व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः"
		(iv) "आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्"
		(v) "ऋकारान्ता मातृ दुहितृ स्वसृ यातृ ननान्दृ"
		(vi) "भूमि विद्युत् सरित् लता वनिता अभिधानानि"

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	3.	
उत्तरम्		3 (i) "घेढः"
		(ii) "इग्यणः सम्प्रसारणम्"
		अर्थ - यण स्थाने प्रयुज्यमानो य इक स सम्प्रसारण संज्ञः स्यात
		(iii) "नहो धः"
		(iv) "अहोभ्याम्" रूपं - "अहन्" सूत्रेण भवति।
		(v) "तद्धितश्चासर्व विभक्तिः"
		अर्थ - तद्धितान्तोमव्ययं ऽव्ययसंस स्यात्।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(vi) "कुमारी" डीप् प्रत्यय - "वयसि प्रथमे" सूत्रेण भवति।

(vii) 'श्रीः' "प्रातिपदिकार्थ लिङ्गपरिमाण वचनमात्रे प्रथमा:"

(viii) कारक - 'क्रियाजनकत्वं कारकत्वं स्यात्'।

(ix) "कर्तुरीप्सिततमं कर्म"

अर्थ - कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमं कारकं कर्म संज्ञं स्यात्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(x) 'पुत्रेण सहागतः पिता'

विधायकसूत्रम् — "सहयुक्तेऽप्रधाने" सूत्रेणास्ति।

(xi) स्त्री लिङ्गम् (घ)

(xii) 'मिन्वन्तः'

अर्थ - मिप्रत्ययान्तो मिप्रत्ययान्तस्य ततस्त्रियां स्यात्।

BSER-167/2020

1+1+1+1+1+1+1+1+1+1+1+1 = 12

12

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	17	

उत्तरम् (क) चतुर्णाम् — चतुर शब्दात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञायाम् कृते । "स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस्ङेभ्यांभ्यस्ङसिभ्यांभ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप्" इति सूत्रेण षष्ठी बहुवचने आम् विभक्तौ ।

(चतुर + आम्) इति स्थितौ ।

"ह्रस्वनद्यापो नुट्" इति सूत्रेण नुडागमे अनु. लोपे

(चतुर + नाम्) इति जाते

"रषाभ्यां नो णः समानपदे" इति सूत्रेण नस्य णत्वे कृते ।

(चतुर + णाम्) इति स्थितौ ।

"खरवसानयोर्विसर्जनीयः" इति सूत्रेण विसर्गे प्राप्ते "रोः सुपि" इति निषेधे कृते ।

"अचो रहाभ्यां द्वे" इति सूत्रेण णस्य द्वित्वे कृते । जलतुकिन्या परसवर्णपरस्य कृते ।

चतुर्ण्णाम्

इति रूपम् सिद्धम् ।

15

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ग) अयम् → इदम् शब्दात् "कृत्तद्धित समासाश्च" इति सूत्रेण प्रा. संज्ञायाम् कृते, "स्वौजस ——" इत्यादीना सूत्रेण प्रथमा एकवचने सु विभक्तौ

(इदम् + सु) इति स्थितौ।
"इदमोमः" इति सूत्रेण मकारस्य मत्वे कृते
"त्यदादीनाम्" इति सूत्रेण मका उत्वे कृते।

(इद अ + सु) इति जाते।
"हलिलोपः" इति सूत्रेण इद भागस्य लोपे कृते
"इदोऽयपुंसि" इति सूत्रेण अय आदेशे कृते।

(अय + अ + सु) इति जाते।
"अतोऽम्" इति सूत्रेण सु स्थाने ऽमादेशे कृते।
"अमिपूर्वः" इति सूत्रेण पूर्वरूप मेकादेशे कृते।

अयम्

इति रूपम् सिद्धम्।

12/12 (23)

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	18	

उत्तरम् → (ख) **धौः** – दिव शब्दात् प्रा॰ संज्ञायाम् "स्वौजस् —" इत्यादीनां सूत्रे॰ प्रथमा एकवचने सु विभक्तौ ऽनु॰लो॰

(दिव+स) इति जाते। "दिव औत्" इति सूत्रेण वकारस्य औत् आदेशे कृते। अनु॰ लोपे। "इकोयणचि" इति सूत्रेण यणे कृते सस्य रुत्वे विसर्गः कृते

धौः इति रूपम् सिद्धम्।

(क) **उष्णिक्** → (उष्) पूर्वकात् ष्णिह धातोः क्विप् प्रत्यये क्विप् तस्य सर्वापहारी लोपे। "धात्वादेः षः सः" इति सूत्रेण षत्वे कृते "रषाभ्यां नो णः समानपदे" नस्य णत्वे कृते।

उष्णिह शब्दात् प्रा॰ संज्ञायाम् प्रथमा एकवचने सु विभक्तौ "हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सु तिस्य ऽपृक्तं हल्" इत्यस्य सु लोपे

"क्विन्प्रत्ययस्य कुः" इति सूत्रेण हकारस्य कुत्वेन कृते। जश्त्वेन चर्त्वे

उष्णिक् इति रूपम् सिद्धम्।

15/15 3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	19	

उत्तरम् (क) स्वनडुही - स्वनडुह शब्दात् प्रा. संज्ञा "स्वौजस — " इत्यादीना सूत्रेण प्रथमा द्वि वचने औं विभक्तौ ।

"नपुंसकाच्च" इति सूत्रेण औं स्थाने शी आदेशे कृते अनु. लोपे ।

(स्वनडुह + ई) वर्ण संयोगे च
स्वनडुही
इति रुपम सिद्धम्

(ख) कानि
किम् शब्दात् प्रा. संज्ञा प्रथमा बहुवचने जस् विभक्तौ।
(किम् + जस्) इति स्थितौ । "किम कः" इति सूत्रेण किम् स्थाने क आदेशे कृते "नपुंसकस्य झलचः" इति सूत्रेण नुमागमे अनु. लोपे कृते
(क + न + जस्) इति जाते ।
"जश्शसोशिः" इति सूत्रेण जस् स्थाने शी आदेशे कृते अनु. लोपे

"सर्वनाम स्थाने चाऽसम्बुद्धौ" इति सूत्रेण उपधा दीर्घे कृते ।
कानि
इति रुपम् सिद्धम् ।

14/14 3

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	२०	

उत्तरम् -

(क) रामेण बाणेन हतो बाली → राम शब्दस्य स्वतंत्र कर्ता "स्वतंत्रकर्ता" इति सूत्रेण स्वतंत्रेण कर्तृ संज्ञा स्यात् । बाण शब्दस्य तृतीया विभक्ति भवति "साधकतमं करणम्" इति सूत्रेण करण संज्ञा कृते "कर्तृकरणयोस्तृतीया" इति सूत्रेण तृतीया विभक्तौ कृते

रामेण बाणेन हतो बाली इति रूपम् सिद्धम् ।

BSER-167/2020

विप्राय गां ददाति → "कर्मणा यमभि प्रैति स सम्प्रदानम्" इति सूत्रेण सम्प्र विप्रा शब्दस्य सम्प्रदान संज्ञ स्यात् । "चतुर्थी सम्प्रदाने" इति सूत्रेण विप्राय शब्दस्य चतुर्थी विभक्ति भवति

विप्राय गां ददाति

इति रूपम् सिद्धम् ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	२१	
उत्तरम् -		(क) सुधुभ्याम् → सुदिव् शब्दात् प्रा॰ संज्ञायाम् "स्वौजस ——" इत्यादीना सूत्रेण तृतीया द्विवचने भ्याम् विभक्तौ
		(सुदिव् + भ्याम्) इति जाते।
		"दिव उत्" इति सूत्रेण वकारस्य उत्वे कृते। दकारस्य धकारे कृते,
		"इकोयणचि" इति सूत्रेण यणे कृते कृते।
		सुधुभ्याम् इति रूपम् सिद्धम्।
		(ग) सः → तद् शब्दात् प्रा॰ संज्ञायाम "स्वौजस ——" इत्यादीना सूत्रेण, प्रथमा एकवचने सु विभक्तौ अनुलोप "तदो सः सावनन्त्ययो" इति सूत्रेण तकारस्य सकारे कृते।
		सस्य रुत्वे विसर्गे कृते
		सः इति रूपम् सिद्धम्।
२/२		

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	२२	

उत्तरम् -

(क) बाला - बाल शब्दात् "स्त्रियां" इति सूत्रेण स्त्रीत्व विवक्षायां कृते "जाते स्त्रिविषया दयोपधात्" इति सूत्रेण डीष् प्राप्ते तं प्रबाध्य

"अजाद्यतष्टाप्" इति सूत्रेण टाप् प्रत्यये अनु॰ लोपे।

(बाल + अ) इति स्थितौ "यचिभम्" इति सूत्रेण भसंज्ञायां "यस्येति च" इति सूत्रेण ~~अले कृते~~ अकार लोपे कृते।

बाला इति रूपम् सिद्धम्।

(घ) गार्गी → गार्ग्य शब्दात् "स्त्रियां" इति सूत्रेण स्त्रीत्व विवक्षायां कृते "यञश्च" इति सूत्रेण ङीप् प्रत्यये अनु॰ लोपे

(गार्ग्य + ई) इति जाते "हलस्तद्धितस्य" इति सूत्रेण यकार लोपे कृते।

गार्गी इति रूपम् सिद्धम्।

2½

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न 23

उत्तरम् -

(ख) हरिं भजति - इत्यस्य द्वितीया विभक्ति भवति।
"कर्तुरीप्सिततमं कर्म" इति सूत्रेण कर्म संज्ञायाम् कृते।
"कर्मणि द्वितीया" इति सूत्रेण द्वितीया विभक्तौ भवति।

हरिं भजति - इति रूपम् सिद्धम्।

(क) हे राम! सम्बोधने ऽस्ति।
"सम्बोधने च" इति सूत्रेण हे राम प्रयोगे सम्बोधने ऽर्थे प्रथमा विभक्ति भवति।
हे राम प्रथमा भवति।

हे राम! इति रूपम सिद्धम्।

2/2

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	4	
उत्तरम् →		धुक् → दुह् शब्दात् प्रा - संज्ञायाम् "स्वौजस" — " इत्यादीना सूत्रेण प्रथ - सप्तमी बहुवचने सुप् विभक्तौ अनु - लोपे ।.
		(दुह् + सु) इति स्थितौ । "दादेधातोर्घः" इति सूत्रेण हकारस्य घकार कृते
		(दुघ + सु) इति स्थितौ । "एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो" इति सूत्रेण दकारस्य धकार कृते । "झलां जशोऽन्ते" इति सूत्रेण जश्त्वेन । "वाऽवसाने" इति सूत्रेण चर्त्वे कृते
2		(धुक् + सु) "हल्ङ्याब्भ्यो..." इति सूत्रेण लोपे कृते
		'धुक्' इति रूपम् सिद्धम् ।.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	5	
उत्तरम्-		कः → "किम् शब्दात् कृत्तद्धित समासाश्च" इति सूत्रेण प्रा॰ संज्ञायाम् "स्वौजस —" इत्यादीना सूत्रेण प्रथमा एकवचने सु विभक्तौ। "किम् कः" इति सूत्रेण किम् स्थाने क॰ आदेशे कृते। सस्य रुत्वे विसर्गे।
1		कः इति रूपम् सिद्धम्।
प्रश्न	6	
उत्तरम्-		"अनाप्यकः"
		सूत्रप्रकार → इदम् सूत्रम् विधि सूत्रम् वर्तते।
		पदच्छेद → अन्, आप्य अकः इति त्रय पदच्छेद सन्ति।
1		अनुवृत्ति → "इदोयपुंसि" अथ आदेशे कृते इत्यस्य आदेश सूत्रेण अनुवृत्ति भवति
		वृत्ति → अककारस्य इदम् अनादेशे स्यात्।
		उदा॰ → अनेन।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न 7

उपानत् - उपनह् शब्दात् प्रा० संज्ञा सु विभक्तौ "हलङ्या — " लोपे कृते "नहो धः" इति सूत्रेण हकारस्य धकारे कृते "नहिवृति वृषि व्यधि रुचि सहि तनिषु क्वौ" इति सूत्रेण उपधा दीर्घे कृते "झलां जशो ऽन्ते" इति सूत्रेण जश्त्वेन "वाऽवसाने" इति सूत्रेण चर्त्वेन तकारे कृते।

उपानत् इति रूपम् सिद्धम्।

2

प्रश्न 8

उत्तर → 'यः सौ'

सूत्रप्रकार → इदम् सूत्रम् विधि सूत्रम् वर्तते'

पदच्छेद → "यः सौ" इति द्वय पदच्छेद ऽस्ति।

अनुवृत्ति → "दो ऽद्वि" इत्यस्य सूत्रेण अनुवृत्ति भवति'

वृत्ति → इदमो दस्य यः स्यात्सौ।"

उदा० इयम्।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न 10
उत्तरम् →

" वा नपुंसकस्य "

सूत्रप्रकार → इदम् सूत्रम् विधि सूत्रम् वर्तते।

पदच्छेद → वा नपुंस, कस्य इति अयः पदच्छेद भव अस्ति।

अनुवृत्ति → "आच्छीनद्योर्नुम" इत्यस्य सूत्रेण अनुवृत्ति भवति।

वृत्ति → अभ्यस्तात् नपुंसकात्‌ नुम आडामे स्यात्।

उदा॰ ददन्ति।

2

प्रश्न 11
उत्तरम् →

'जीवसे' जीव धातो " तुमर्थे सेसे नसे असे नक्से कसेन अध्ये अध्यैन कध्ये कध्यैन तवै शध्ये शध्यैन तवे तवेन तवेऽ." इति सूत्रेण असे प्रत्यय।

जीवसे "कृन्मेजन्त" इति सूत्रेण अव्यय संज्ञायाम् कृते "अव्ययदाप्सुपः" इति सूत्रेण लुक् कृते जीवसे

इति स्वपम् सिद्धम्।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	12	
उत्तरम्-		"षिद्गौरादिभ्यश्च"
		सूत्र प्रकार → इदम् सूत्रम् विधि सूत्रम् वर्तते ।
		पदच्छेद → षिद् गौरा, दिभ् यश्च" इति चत्वार पदच्छेद भवति ।
2		अनुवृत्ति → "अन्यतो ङीष्" इति सूत्रेण ङ्यस्य अनुवृत्ति भवति ।
		वृत्ति → षिद्भ्यो गौरादिभ्यश्च ङीष् स्यात्
		उदा- गौरी ।
प्रश्न	14	
उत्तरम्-		"अकथितं च"
		सूत्रप्रकार → इदम् सूत्रम् संज्ञा सूत्रम् वर्तते ।
2		पदच्छेद → अक, थितं, च इति त्रय पदच्छेद अस्ति
		अनुवृत्ति → "दिव: कर्म च" ङ्यस्य कर्म संज्ञा अनुवृत्ति भवति ।
		वृत्ति → अपादानादि विशेषैर विवक्षितं कारकं कर्म संज्ञा स्यात्
		उदा- → तण्डुलोदनं पचति ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
प्रश्न	9	
उत्तरम्		स्वनडुत् → स्वनडुह शब्दात् प्रा. संज्ञा प्रथमा एकवचने सु विभक्तौ - हलड्याप् लोपे। "वसुस्रंसु ध्वंस्वनडुहां दः जलाक्षरे इति" प्रथमे पतेन (हकारस्य दकारे इति स्वनडुत् इति रूपम् सिद्धम्)
2		
प्रश्न →	15	
उत्तरम्		उदधिः इत्यस्य स्त्रीलिङ्ग भवति "उऽड्याबन्तस्य" इति सूत्रेण भवति।
2		
प्रश्न	16	कुरु, इत्यस्य स्त्रीलिङ्ग "उऽड्याबन्तस्य" सूत्रेण भवति।
उत्तरम्		
प्रश्न	13	तण्डुलानां किम्
उत्तरम् →		परन्तु भवति शंका यत् तण्डुलानां इत्यस्यापद

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पाठस्य को लाभः अस्ति इति जिज्ञासायां शंका अस्ति तत्र च तम्बस्यछां इति पद पाठस्य को दोषः इति स्थितियां तम्बाहछां उचित पद आवश्यक अस्ति इति तानिष्ठं निष्पन्नम् भवति।

1

पयसा ओदनं भुङ्क्ते →

शंका → परस्तुतः भवति शंका यत् ओदनं "तथायुक्तं चानीप्सितम्" इति सूत्रेण पयसा ओदनं भुङ्क्ते (चावल के साथ विषखाया) इत्यस्य अर्थे पद लाभः भवति

समाधानम् → प्रश्ने सति अत्र अर्थे यत् ओदनं भुङ्क्ते, इति, पद पाठस्य कोः दोषः इति जिज्ञासायां "तथायुक्तं चानीप्सितम्" इति सूत्रेण पद पाठस्य उचित च भवति इति पदस्य पक्षे पक्षे वाक्यं तानिष्ठं रूपं निष्पन्नम् भवति
ओदनं — पयसा ओदनं भुङ्क्ते इति वाक्यं स्पष्टयत् अस्ति।

80/80 Eighty आठसौ 80

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

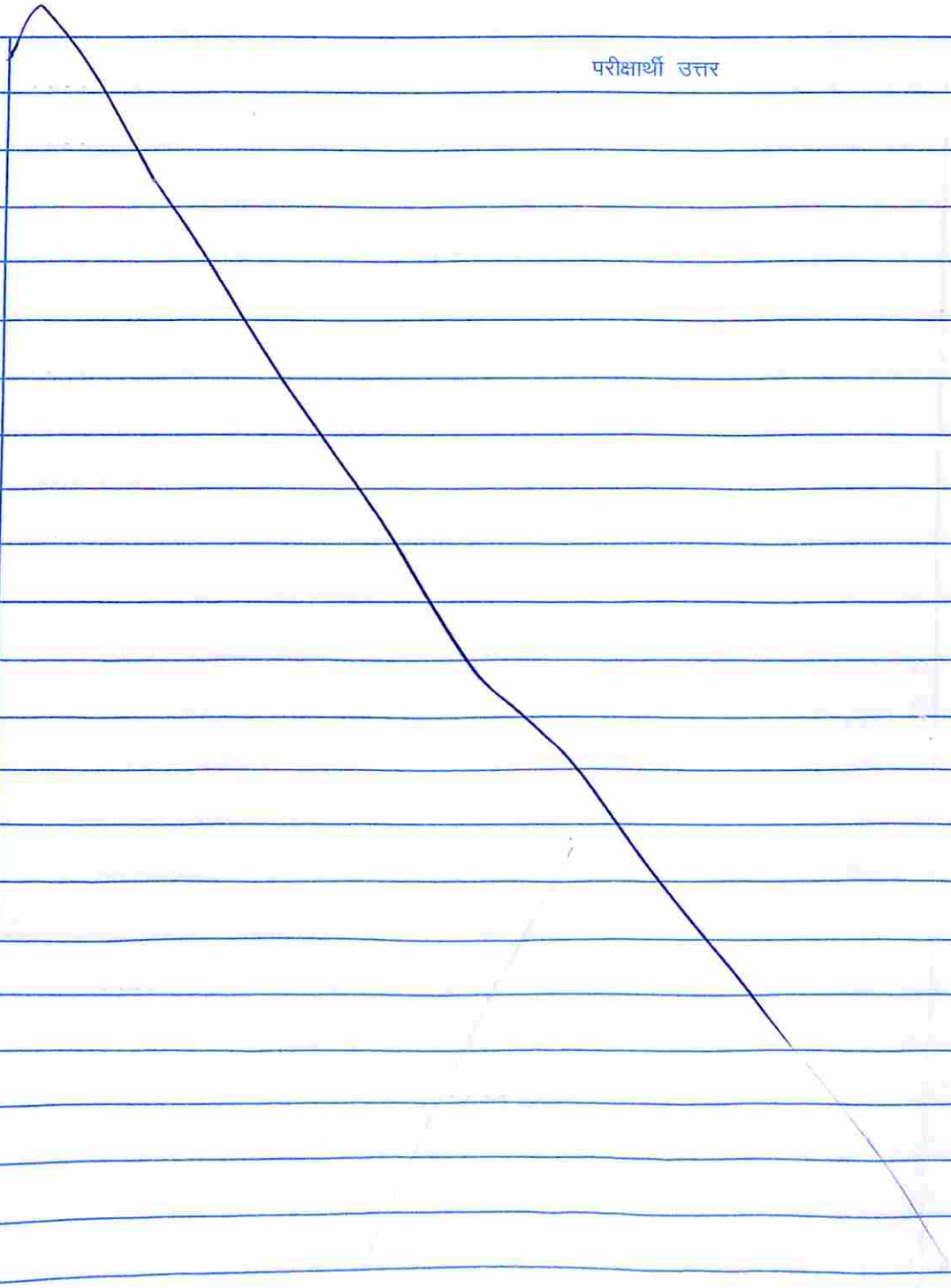

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-167/2020